गोस्वामी तुलसीदास जी के साहित्य में सांगीतिक तत्व–

डॉ0 इभा सिरोठिया
एसोसिएट प्रोफेसर संगीत गायन
आर्यकन्या डिग्री कालेज,
प्रयागराज उ0प्र0

तुलसीदास जी के साहित्य में गीतों की भाव प्रवणता को उजागर करने में उनमें निहित संगीत विधान प्राण तत्व की तरह है। उनमें संगीत निर्वाह के लिए काव्य तत्व की उपेक्षा नहीं हुई और विशेषता यह की काव्यत्व की रक्षा हेतु सांगीतिक तत्व का मान–मर्दन, भावभेद तथा रसभेद के निरूपण में संगीतात्मकता की उपेक्षा की गयी। तुलसी के काव्य में यथा स्थान रागों का उल्लेख मिलता है। विद्वतजन तुलसी को संगीतज्ञ भी मानते हैं क्योंकि जिन गीतों में संगीत का सौन्दर्य, शास्त्रीय राग–ताल, प्रचुर एवं उत्कृट हो उसके रचयिता के संगीत ज्ञान के सम्बन्ध में शंका निमूल है। डॉ0 राजपति दीक्षित जी का मत है :– इन ग्रंथों में सन्निविष्ट पदों का वास्तविक सौन्दर्य राग–रागिनियों का विशेषज्ञ सहृदय ही पा सकता है। इन कृतियों के छंदों द्वारा काव्य और संगीत का समन्वय तथा अन्यायोन्याश्रय सम्बन्ध समझने में किसी विशेष प्रयास की अपेक्षा नहीं है।[1]

गीति काव्य की दृष्टि से तुलसी के साहित्य में ये निम्नलिखित छः ग्रन्थ उल्लेखनीय है :– कृष्ण गीतावली, विनय पत्रिका, रामलला, नहछू, जानकी मंगल, पार्वती मंगल इनमें से प्रथम तीन ग्रन्थ साहित्यिक गीति के ग्रन्थ हैं तथा अन्य तीन ग्रंथ सांगीतिक तत्व समाये लोकगीतिका पद्वति के परिचायक हैं। प्रायः कवि सहानुभूति जनित भावुकता तथा वैयक्तिक भावुकता से परिपूरित होकर गीति काव्य की रचना करता है।

तुलसीकृत गीतावली संगीतात्मकता की दृष्टि से पूर्ण रूपेण गीतावली है। इसमें पुत्र विरह में माताओं और शरणागति में विभीषण की मनोगत भावनाओं का चित्रण है। इस ग्रंथ में राम के वन गमन के समय, राम एवं भरत के मिलन का वर्णन दृष्टव्य होता है।

तुलसी के काव्य में संतुलित चिन्तन, अनुभूति और कल्पना के साथ संगीत तत्व का प्रादुर्भाव होता है तथा संगीत की अजस्र धारा निर्वाध प्रवाहित होती है।

आत्मा के जिस संगीत को महाकवि गोस्वामी तुलसीदास ने वाणी दी है वह अपने मानस में समस्त सौन्दर्य से मुखरित है। व्यक्तित्व का संगीत ही आत्म संगीत है। यह संगीत जड़ता को चेतना मतें परिवर्तित करता है। तुलसी के काव्य में हृदय की बात है। उनके काव्य में कोलाहल नहीं अपितु हृदय की वेदना को शान्त करने की शक्ति है।

यद्यपि तुलसी के पद विभिन्न राग रागिनियों में बांधकर गाये जाते हैं जिनमें एक निश्चित परम्परा का निर्वाह दिखायी नहीं देता तथापि उन्होंने गीतावली के 328 पदों में विभिन्न प्रकार के 18 रागों का कृष्णगीतावली के 61 मुक्तों में 10 रागों का और विनय पत्रिका के 279 गीतों में 20 रागों का प्रयोग किया है। उनके द्वारा प्रयुक्त रागों में आसावरी, कल्याण, कान्हरा, केदार, जैतश्री, तोड़ी, धनाश्री, नट, बसंत, बिलावल, विहारा, भैरव, भैरवी, मल्हार, मारु, रामकली, ललित, विभास, सारंग, सौरठ आदि प्रधान है। प्राचीन गीतिकारों की भांति उन्होंने भी अपने गीतों के आरम्भ में राग का नाम लिख दिया है।

विनय पत्रिका तुलसीदास के समय समय पर लिखे गये श्रेष्ठतम गीतियों का संग्रह ग्रंथ है। इसमें कवि के आन्तरिक हृदय की अभिव्यक्ति हुई है। विनयपत्रिका में तुलसीदास ने अभिव्यंजना को प्रधानता दी है। गीति परम्परा में विनय पत्रिका की गिनती उत्कृष्ट ग्रंथों में होती है। इस ग्रंथ के प्रारम्भ में अनेक देवताओं की स्तुति स्रोत शैली में की गयी है। इन स्रोतो में –

श्री रामचन्द्र कृपालु भजमन
हरण भव भय दारुणम्।
नव कंज लोचन कंज मुख कर
कंज पद कंजारुणम्।।[2]

तुलसीदास काव्य में गायन के निश्चित परम्परा के निर्वाह के अभाव में भी तुलसी की संगीत मर्मज्ञता में एकरूपता नहीं रही। अतः एक ही परम्परा के दो विभिन्न गायक किसी भी एक राग की व्याख्या पृथक–पृथक रूप से करते हैं। पं0 भातखण्डे जी

की ने पुस्तक मालिका में अन्य आचार्यो की ही भॉति तुलसीदास के पद भी संग्रहीत है उदाहरणार्थ राग भूपाली की प्रसिद्ध ख्याल बंदिश –

जब ही सब निरपति निरास भए ।[3]

प्रातः स्मरणीय पं0 विष्णु दिगम्बर जी ने भी तुलसी के पदों को अच्छी तरह परखा तथा शास्त्रीय राग–रागिनियों व तालों में निबद्ध कर उन्हें गाया। आज भी तुलसी के लोकरंजक काव्य अपेक्षाकृत अधिक गाये जा रहे हैं। उनके द्वारा विरचित साहित्य लोक गायकों से लेकर शास्त्रीय गायकों तक समान रूप से प्रिय हैं। तुलसी के भक्ति पद जन–मानस में व्याप्त कलुषता को संगीत रूपी पवित्र निर्मल जाह्नवी के रूप में काफी हद तक परिमार्जित करते हैं।

भक्तिकाल में संगीत के जनमानस के मध्य प्रचारित करने में समस्त भक्त कवियों में गोस्वामी तुलसीदास की अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका रही है। सर्वविदित तत्व है कि भक्ति और संगीत का चिरन्तन एवं अन्योन्याश्रित संबंध है। भक्ति भावना के प्रचार प्रसार के लिए सभी भक्त कवियों ने संगीत को सबसे पवित्र तथा सशक्त माध्यम माना है। संगीतज्ञ कवियों ने न केवल अपनी स्वर साधना से भाषा को परिष्कार एवं मधुरता प्रदान की उन्होंने उन संगीतज्ञ भक्त कवियों ने न केवल अप्रतिम नाद–सौन्दर्य से कविता को चिरायु बनाया। ये संगीत भक्त पदगेयता के लिए जितने लोकप्रिय हुए उतनी ही अनमें निहित भक्ति के लिए भी हुए।

पं0 ओंकार नाथ ठाकुर ने इन भक्त कवियों के पदों के संबंध में कहा है :– भक्ति युगीन कवियों के पद अद्वितीय है जैसे शुद्ध भावनामय इन कवियों के पद हैं, वैसा ही तन्मयकारी है इनका संगीत।[4]

भक्ति और संगीत के शाश्वत संबंध को स्वीकार करते हुए स्वयं तुलसी ने अपनी भक्तिमय काव्य साधना में संगीत को महत्व दिया "चौथि भगति मम गुन गन करह कपट तजि गान।"[5]

तुलसी के काव्य में अनेक उद्धरण दृष्टव्य होते हैं जिससे उनके संगीत का ज्ञान का परिचय मिलता है :–

1. उघटहि छन्द, प्रबन्ध, गीत, पद, राग, ताल, बंधान, गीतावली।

2. सारंग, गुड, मलार, सोरठ, सुहव, सुघरण, बाजही, गीतावली

3. बाज सुराग की गोडर ताली, रामचरित मानस

4. मारु राग सुभट सुखदायी – रामचरित मानस

5. नागर नट चितवही चकि

उठाहीं न ताल बंधान – रामचरित मानस

छंद, प्रबन्ध, गीत, पद राग, ताल आदि संगीत की पारिभाषिक शब्दावली के अंतर्गत आते हैं। सारंग, गुंडमल्हार, सोरठ, सुहव, मारु आदि शब्द उनके राग ज्ञान का परिचायक है। भाव, रस समय, ऋतु के अनुकूल रागों का प्रयोग भी उनके काव्य में हुआ है।

जिनका नाद विद्या से परिचय है, वे तुलसी के काव्य गंगा में अवगाहन लगाकर सहज ही अनुमान लगा सकते हैं।

उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि तुलसी भारतीय संस्कृति के सच्चे प्रतिनिधि कवि थे उन्होंने अपनी साहित्य साधना से लोक मंगल की भावना के विकास हेतु भक्ति और संगीत के चिरंतन सम्बन्ध और अखंडित सौन्दर्य को अमरता प्रदान की । भक्तिमय संगीतात्मक काव्यों की रचना कर कीरति भनिति भूति भलसोई। सुरसरि सम सब कहं हित होई। के उद्देश्य की पूर्ति करता है। तुलसी ने विनय पत्रिका के प्रथम पद में ही गाइए गणपति जग वंदन लिखकर भक्ति के लिए गान की आवश्यकता पर बल दिया तथा मति अनुरूप रामगुन गाऊं में स्वतः गोस्वामी जी की गान को परिलक्षित होता है।

संदर्भ

1. भक्तमाल – पृ0 719, छं0सं0 115 (मीरा संगीत अंक–पृ0 11)

2. विनय पत्रिका – पृ0सं0 45

3. क्रमिक पुस्तक मालिका भाग–3

4. तुलसी के भक्त व्यात्मक गीत (तुलसी काव्यकला और दर्शन–पृ0सं0 87)

5. विनय पत्रिका

6. संगीत–दिसम्बर 1985 पृ0 सं0 12